हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

तापमान

अधिकतम 40.4 डिग्री
न्यूनतम 20.9 डिग्री

11 राई स्पोर्ट्स स्कूल की प्रवेश परीक्षा पास करने ...

12 स्कूल में पौधरोपण कर ग्रामीणों को दिया पर्यावरण .

खबर संक्षेप

रणबीर गंगवा आज कई कार्यक्रमों में लेंगे भाग

रोहतक। हरियाणा के लोक निमार्ण एवं जनस्वास्थ्य मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को रोहतक में अलग-अलग कार्यक्रमों में भाग लेंगे। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को दोपहर 12 बजे बाबा लक्ष्मण पुरी डेरे पर आयोजित नेशनल थैलेसीमिया सेमिनार में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे। इसके उपरांत कैबिनेट मंत्री गुरु नानकपुरा में 2370.32 लाख रुपये की लागत से बने वर्षा जल निपटा केंद्र का उद्घाटन करेंगे। इस डिस्पोजल के निर्माण से महावीर कॉलोनी, सैनीपुरा, संजय कॉलोनी, न्यू चमनपुरा कॉलोनी, कृष्णा कॉलोनी और साई दास कॉलोनी आदि क्षेत्रों को लाभ मिलेगा। डिस्पोजल केंद्र में एक बड़ा एकीकृत टैंक बनाया गया है। तीन स्क्रीनिंग चैंबर भी इसमें बनाए गए हैं। इसके अलावा तीन इनलेट चैंबर बनाए गए हैं।

बीपीएल परिवारों को दिया जा रहा ऋण

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की ओर से अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को, जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं, बीपीएल परिवार को अपना स्वयं रोजगार स्थापित करने के लिए बैंकों के माध्यम से ऋण उपलब्ध करवाया जाता है। धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि योजना का लाभ उन पात्र परिवारों को मिलेगा, जिनकी पारिवारिक वार्षिक आय ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में 1 लाख 80 हजार रुपये से अधिक न हो, को बैंकों के माध्यम से 1 लाख 50 हजार रुपये तक का ऋण पशुपालन, किरयाना दुकान, मनियारी दुकान, ब्यूटी पार्लर, ई-रिक्शा, सूअर पालन या अन्य कोई लाभप्रद योजना इत्यादि के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है।

डॉक्टर्स दिवस पर वर्क टू रूल का आह्वान

रोहतक। यूडीएफ संगठन ने 1 जुलाई को डॉक्टर्स दिवस पर वर्क टू रूल का आह्वान किया है। यूडीएफ ने सभी एमबीबीएस और पीजी मेडिकल स्टूडेंट्स से अनुरोध किया है कि मरीजों की देखभाल से कोई समझौता किए बगैर यह दिवस मनाएं। यूडीएफ के चेयरपर्सन व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. लक्ष्य मित्तल के अनुसार इस पहल का उद्देश्य स्थापित नियमों के पालन को बढ़ावा देना है। साथ ही, जीवन और काम के बीच स्वस्थ तालमेल स्थापित करना है। यूनाइटेड डॉक्टर्स फ्रंट (यूडीएफ) हरियाणा अध्यक्ष डॉ अमित व्यास ने मेडिकल शिक्षा में नियमों के समुचित अनुपालन पर जोर दिया है। इसमें शामिल हैं।

दर्दनाक हादसा: जयपुर-आगरा हाईवे पर दुर्घटना, परिवार के तीन सदस्यों सहित चार की मौत

जाना था मेहंदीपुर, काल रास्ता भटकाकर ले गया दौसा, पलभर में खत्म हो गया परिवार

आरटीओ ने चेकिंग के लिए रोका था कैंटर, तेज रफ्तार कार कैंटर में जा घुसी, मौके पर ही सभी की मौत

गांव खेड़ी साध मां, बेटा व बेटी व एक अन्य की मौत, घटना के बाद गांव में पसरा मातम। एक साथ जलीं चार चिताएं।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गांव खेड़ीसाध के एक ही परिवार के तीन व एक अन्य सहित चार लोगों को राजस्थान में सड़क हादसे में मौत हो गई। यह परिवार 27 जून की शाम मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन के लिए निकला था। उनकी कार जयपुर-आगरा हाइवे पर खड़े कैंटर में घुस गई। इस कैंटर को आरटीओ ने चेकिंग के लिए रोका था। तेज रफ्तार होने की वजह से कार कैंटर से टकरा गई। इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर लोगों की मदद से कार में सवार लोगों को बाहर निकाला और उपचार के लिए अस्पताल में भेजा गया, लेकिन तब तक सभी की मौत हो चुकी थी।

इस हादसे में कार सवार मां, बेटा-बेटी और दादी की मौके पर ही मौत हो गई। परिजनों ने शनिवार को सभी को एक साथ अंतिम विदाई दी है। बता दें कि यह परिवार 27 जून शाम ही मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन के लिए निकला था। इनके साथ दो गाड़ियां और थी, जिनमें करीब 12 लोग थे। वे लोग मेहंदीपुर बालाजी पहुंच गए थे, जबकि ये परिवार रास्ता भटकने की वजह से पहुंच नहीं पाया था और हादसे का शिकार हो गया। मृतकों की पहचान गांव खेड़ीसाध निवासी 40 साल की प्रमिला देवी, उनका 20 साल का बेटा दिपांशु और 16 साल की बेटी साक्षी के तौर पर हुई है। इसके अलावा मृतकों में 60 साल की राजबाला भी शामिल है। पुलिस जांच में पता लगा है कि बीती रात करीब सवा 12 बजे दौसा के कलेक्ट्रेट चौराहे के पास आरटीओ ऑफिस के सामने सड़क हादसा हो गया है। तीन महीने में ही पूरा परिवार खत्म हो गया।

भाई-बहन और मां

घर का दरवाजा खोलने वाला नहीं बचा

चिताओं को मुखाग्नि देते हुए परिजन

27 जून को मेहंदीपुर निकले थे

राजबाला, दादी

जानकारी के अनुसार आरटीओ की चेकिंग के दौरान ट्रक को सड़क किनारे रोका गया था। उस दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार कार की ट्रक से टक्कर हो गई। हादसा इतना भयानक था कि कार के परखच्चे उड़ तक गए। पुलिस जांच में यह भी पता लगा है कि बीते दिन 27 जून की सुबह मेहंदीपुर बालाजी के दर्शन के गए थे। लेकिन दर्शन करने से पहले ही हादसा हो गया।

दीपांशु ने जिम्मेदारी उठानी शुरू कर दी थी

दीपांशु के चचेरे भाई राहुल ने बताया कि उसके चाचा राजेंद्र ट्रक ड्राइवर थे। करीब डेढ़ साल पहले एक हादसे में उनकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी, जिस कारण वे बिस्तर पर आ गए थे। पिता की कंडीशन को देख दीपांशु ने घर की जिम्मेदारी उठानी शुरू कर दी थी। वह इंटर पास था। इसलिए उसने एक कंपनी के जुड़कर एसी और फ्रीज ठीक करने का काम शुरू कर दिया था। एक अप्रैल 2025 को ही चाचा राजेंद्र की मौत हो गई। 23 जून को ही परिवार में छमाही हुई थी।

दीपांशु ने बनाया था मेहंदीपुर जाने का प्लान

राहुल ने बताया कि उनके परिवार में चाचा राजेंद्र चार भाई और एक बहन है। सबक गांव में ही अलग-अलग परिवार है। चाचा राजेंद्र की मौत के बाद उनके परिवार में चाची प्रमिला और उनके दो बच्चे दीपांशु और साक्षी ही बचे थे। साक्षी इस साल 11वीं कक्षा में आई थी। दो-तीन दिन पहले दीपांशु और उसकी फैमिली ने ही मेहंदीपुर बालाजी जाने का प्लान बनाया था।

पति करमबीर की 2014 में हो चुकी मौत

राहुल ने बताया कि दीपांशु की फैमिली और परिवार के अन्य सभी लोग इन तीनों गाड़ियों में सवार होकर 27 जून की शाम को मेहंदीपुर के लिए निकले थे। गांव में ही रिश्ते की दादी राजबाला देवी पत्नी करमबीर भी दीपांशु की गाड़ी में सवार हो गई थी। राजबाला के पति करमबीर की 2014 में मौत हो चुकी है। उनके दो बेटे अमित और सुमित है, जो ट्रांसपोर्ट का कारोबार करते है। दोनों बेटों ने ही उसे मेहंदीपुर जाने के लिए रवाना किया था।

दौसा कलक्ट्रेट से दोबारा गाड़ी मोड़ी

परिजनों ने बताया कि जयपुर-आगरा हाईवे पर बने इंटरचेंज से उतर कर महुआ होते हुए मेहंदीपुर बालाजी जाना था। इस बीच दौसा से निकल रहे इंटरचेंज से मेहंदीपुर बालाजी जाने की बजाय दीपांशु की गाड़ी जयपुर की तरफ चली गई। दौसा पहुंचने पर पता चला कि ये गलत रास्ते पर आ गए। ऐसे में दौसा कलक्ट्रेट से दोबारा गाड़ी मोड़ कर बालाजी की तरफ जाने लगे, तभी आरटीओ ऑफिस के सामने खड़े कैंटर से कार टकरा गई।

राजस्थान में ही पुलिस की कार्रवाई जारी

हादसे के चलते हाईवे पर जाम लग गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर वाहनों को हटाया और यातायात सुचारू कराया। डिप्टी एसपी रविप्रकाश शर्मा भी रात को ही घटनास्थल पर पहुंच गए थे। मृतकों की पहचान होने पर उनके परिवार के लोगों को हादसे की जानकारी दी गई। उधर, सूचना मिलते ही रात में ही खेड़ी साध गांव से परिवार के लोग राजस्थान के लिए निकल गए थे। शनिवार की दोपहर तक राजस्थान में ही पुलिस की कार्रवाई जारी थी।

एक साथ जलीं चार चिताएं

राहुल ने बताया कि करीब तीन माह पूर्व चाचा राजेंद्र की मौत हो गई थी। अब राजस्थान में हुए हादसे में उनकी पत्नी प्रमिला, बेटा दीपांशु और बेटी साक्षी की भी मौत हो गई है। इस दौरान पूरे गांव में मातम का माहौल बना हुआ है। चाचा की फैमिली का कोई सदस्य जीवित नहीं बचा है। करीब 3 माह में ही एक भरा पूरा परिवार खत्म हो गया। गांव में उनका दो मंजिला मकान है। अब वहां कोई नहीं है। मकान सुनसान पड़ा है। उधर, राजबाला के परिवार में भी गम का माहौल है।

हड़ताल को सफल बनाने के लिए राज्य में चलेगा व्यापक अभियान

ट्रेड यूनियनों एवं कर्मचारी संघों के आह्वान पर 9 जुलाई की देशव्यापी हड़ताल होगी ऐतिहासिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक। रोडवेज कर्मचारी भवन में आयोजित मीटिंग मे मौजूद कर्मचारी एवं रोडवेज कर्मचारी भवन में आयोजित मीटिंग को सम्बोधित करते कर्मचारी नेता । फोटो : हरिभूमि

मजदूर-कर्मचारी विरोधी चार लेबर कोड्स को लागू करने के भाजपा सरकार के प्रयासों को रोकने, ठेका प्रथा, अस्थाई व कच्चे रोजगार के स्थान पर स्थाई नौकरी, न्यूनतम वेतन 26000 रुपए लागू करवाने, निजीकरण पर रोक लगाने, मनरेगा में 200 दिन काम ओर 800 रुपए मजदूरी, निर्माण श्रमिकों के बोर्ड से सुविधाओं हासिल हो, लोकतांत्रिक एवं ट्रेड अधिकारों की रक्षा करने, पुरानी पेंशन बहाली आदि मांगों को लेकर मजदूर ओर कर्मचारी संगठनों के आह्वान पर 9 जुलाई को देशव्यापी आम हड़ताल होगी। इसकी तैयारी में शनिवार को हरियाणा के मजदूर व कर्मचारी संगठनों की संयुक्त राज्य कन्वेंशन रोडवेज कर्मचारी भवन रोहतक में संपन्न हुई। कन्वेंशन को इंटक के प्रदेश महासचिव धर्मवीर लोहान, सचिव कृष्ण नैन, सीटू प्रदेश अध्यक्ष सुरेखा, महासचिव जय भगवान, एटक प्रदेश महासचिव अनिल पंवार, उपाध्यक्ष रणबीर शर्मा, हिंद मजदुर सभा के प्रदेश कोषाध्यक्ष जसपाल राणा, अनिल लाठर, विनोद कुमार, एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव हरि प्रकाश व उपाध्यक्ष ईश्वर राठी, सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा के उप महासचिव संदीप सांगवान केंद्रीय कमेटी नेता सुमेर सिवाच, हरियाणा कर्मचारी महासंघ से के एल सहगल, मुकेश दूहन, बैंक, बीमा क्षेत्र के नेताओं ने संबोधित किया। कन्वेंशन ने हिसार में कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों पर दमन की निंदा करते हुए आंदोलन का समर्थन करने व सरकार द्वारा मांगो का निपटारा करने का प्रस्ताव पारित किया। पीजीआई रोहतक के हड़ताली कच्चे कर्मचारियों की मांगो का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया। वक्ताओं ने बताया कि 9 जुलाई को राष्ट्रव्यापी आम हड़ताल करके मजदूर एवं कर्मचारी जुलूस प्रदर्शन करेंगे। वक्ताओं ने हरियाणा सरकार के प्रति भारी गुस्सा प्रकट करते हुए कहा कि 10 साल से न्यूनतम वेतन रिवाइज नहीं किया गया। यह लाखों मजदूरों की लूट का मामला है। सरकार तुरंत न्यूनतम वेतन रिवाइज करे और इसे 26000 रूपये प्रतिमाह करे और राज्य में तमाम त्रिपक्षीय कमेटियों में केंद्रीय श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों को रखा जाए।

मदवि में विद्यार्थियों ने इंटरैक्टिव एआई टूल्स बनाना सीखा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के गणित विभाग एवं करियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल के सहयोग से रुहिल फ्यूचर टेक्नोलॉजीज़ द्वारा एआई समर स्कूल के तीसरे सप्ताह में छात्रों ने एआई, स्टार्टअप और टीम वर्क से जुड़ी व्यावहारिक समझ हासिल की। यह सप्ताह छात्रों के लिए जोश, सीख और नवाचार से भरपूर रहा। सप्ताह के तीसरे दिन सदफ आलिया द्वारा "ग्रेडियो" पर कार्यशाला आयोजित हुई, जहां छात्रों ने इंटरैक्टिव एआई टूल्स बनाना सीखा। कोडिंग सत्र में छात्रों द्वारा ग्रेडियो से अपने विचारों को तकनीकी रूप देना उनके लिए एक रचनात्मक अनुभव रहा। चौथे दिन का फोकस फाइनल प्रोजेक्ट पर था, जिसमें छात्रों ने ग्रेडियो का उपयोग करते हुए चैटबॉट यूआई और जेमिनी फ्लैश एपीआई इंटीग्रेशन पर कार्य किया। रॉनित और लोविश ग्रोवर जैसे अनुभवी प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में छात्रों ने स्टैंडअप मीटिंग से दिन की शुरुआत की, अनुभव साझा किए और दिन के अंत में रेट्रोस्पेक्टिव मीटिंग के ज़रिए आत्ममूल्यांकन किया। पांचवे दिन, रिया गिरोत्रा ने एआई नैतिकता पर चर्चा की गई।

मौसम ने ली करवट गर्मी से मिली राहत, फसलों को फायदा, आगे भी अच्छी बरसात की संभावना

छाया मानसून, शहर के कई हिस्सों में 14 एमएम बारिश

बारिश में जगह-जगह हुआ जल भराव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शनिवार दोपहर को रोहतक शहर के कुछ हिस्सों में मानसून की पहली बरसात हुई। दोपहर को दिल्ली बाईपास व इसके आगे शहर की तरफ अच्छी बारिश थी। जबकि दिल्ली बाईपास से दिल्ली की तरफ हल्की बूंदाबांदी से लोगों को संतोष करना पड़ा। बरसात के बाद लोगों को पसीने वाली गर्मी का सामना हुआ। आईएमडी द्वारा जारी किए गए पूर्वानुमान में बताया गया है कि आगामी दिनों में जिला रोहतक व इसके आसपास के क्षेत्रों में ज्यादा बरसात भी हो सकती है। फसलों की जरूरत मुताबिक बारिश होती है तो अब किसानों ने धान रोपाई में देरी नहीं करनी चाहिए।

क्योंकि अगेती किस्मों की रोपाई का सही समय आ गया है। गत 16 जून से किसान रोपाई शुरू कर चुके हैं। रोहतक जिले में इस बार 40 हजार हेक्टेयर में रोपाई का लक्ष्य तय है। इसमें से 10-12 प्रतिशत रोपाई हो चुकी है। ऐसे कृषि एवं किसान कल्याण विभाग का अनुमान है। विभाग का कहना है कि जुलाई के पहले सप्ताह तक धान की 1121 किस्म की रोपाई कर दें।

इसके बाद जितनी भी देरी रोपाई में होगी, उतना फसल के उत्पादन पर असर पड़ेगा। अब बरसात का दौर शुरू होने वाला है और नहरों में पानी खूब बह रहा है। रविवार को भालौठ सब ब्रांच में भी सिंचाई विभाग ने पानी की सप्लाई शुरू कर दी है। इससे पहले जेएलएन फीडर में पानी की आपूर्ति हो रही थी। उम्मीद है कि यमुना के कैचमेंट एरिया में लगातार बरसात का दौर जारी रहता है तो जिले की नहरों में पानी की कमी सिंचाई विभाग नहीं रहने देगा।

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

नाबालिग को अगवा करने का आरोपी काबू

सोनीपत। मोहाना थाना सोनीपत पुलिस ने नाबालिग लड़की को अगवा करने की वारदात में शामिल आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित सन्नी निवासी जटवाड़ा का है। पुलिस ने आरोपित को अदालत में पेश किया। जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस ने वारदात में शामिल एक आरोपित को पहले गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। एक व्यक्ति ने गत आठ जून को पुलिस से शिकायत देकर बताया था कि उसकी बेटी संदिग्ध हालत में लापता हो गई। अपने स्तर पर बेटी की तलाश की, लेकिन कोई सुराग हाथ नहीं लग पाया। मामले को लेकर पुलिस को अवगत करवाया।

कर्मचारियों को यूपीएस स्वीकार नहीं : ईष्टकान

सोनीपत। हरियाणा सरकार द्वारा केबिनेट की बैठक करके 1 अगस्त से हरियाणा के एनपीएस कर्मचारी व अधिकारियों के लिए यूपीएस (यूनिफाइड पेंशन स्कीम) लागू करने की घोषणा कर दी गई है। अब कर्मचारी एनपीएस छोड़कर यूपीएस में जा सकेंगे जिसके लिए सरकार यूपीएस के लिए ऑप्शन देगी। यूपीएस के इस फैसले पर एनएमओपीएस के आईटी सैल प्रभारी व पेंशन बहाली संघर्ष समिति के प्रदेश मुख्य सलाहकार डॉ प्रमोद ईष्टकान ने कहा कि यदि हरियाणा सरकार कर्मचारी व अधिकारियों को देना ही चाहती है तो यूपीएस के साथ-साथ ओपीएस का भी ऑप्शन दे दे ताकि कर्मचारी अपने विवेक से जिसमें जाना चाहे जा सके। देशभर में एनएम ओपीएस व हरियाणा में पेंशन बहाली संघर्ष समिति के बैनर तले कई सालों से पुरानी पेंशन की मांग कर रहे है।

सुबह धूप और दोपहर बाद छा गए बादल

बहादुरगढ़। शनिवार की सुबह इलाके में तेज धूप निकली लेकिन दोपहर होते होते मौसम बदल गया। दोपहर बाद आसमान में बादल छाए गए। कुछ मिनट के लिए बूंदाबादी भी हुई, लेकिन तेज बरसात नहीं हो सकी। शाम तक आसमान में बादल छाए हुए थे। बरसात की संभावना बनी हुई थी। इस बदलाव के चलते तापमान में काफी गिरावट आई। शाम को उमस भरी गर्मी से काफी राहत मिली। बता दें कि बीते चंद दिनों से आसमान में रह रहकर बादल छा रहे हैं। बरसात के आसार बनते हैं लेकिन होती नहीं है।

किसान चौक के निकट व्यक्ति का शव मिला

बहादुरगढ़। जाखोदा बाईपास पर किसान चौक के निकट सड़क पर एक व्यक्ति का शव मिला। मौत का कारण स्पष्ट नहीं है और मृतक की पहचान भी नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा दिया है। घटना शुक्रवार शाम की है। दरअसल, जाखोदा बाईपास पर सड़क किनारे एक व्यक्ति मृत अवस्था में था।

एएसपी ने लोगों को साइबर क्राइम से बचने के तरीके बताएं

पुलिस ने पांच माह में साइबर ठगी के पीडितों को लौटाए 1.28 करोड रुपये

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

पुलिस ने 1 जनवरी से 31 मई 2025 तक साइबर ठगों द्वारा ठगे गए नागरिकों के 1 करोड़ 28 लाख 18 हजार 125 रुपये लौटाए हैं। यह जानकारी एएसपी वाईवीआर शशि शेखर ने दी। उन्होंने बताया कि पुलिस ने साइबर ठगी के मामलो में त्वरित कार्यवाही करते हुए पीड़ितों के रुपये लौटाए है। जिला में बीते 5 माह के दौरान साइबर ठगी की कुल 1883 शिकायते प्राप्त हुई। शिकायत प्राप्त होने पर पुलिस ने मामले की गहनता से जांच करते हुए जिस अकाउंट में पीडित का पैसा गया है। उन खातों को फ्रीज करावाया गया। जांच के बाद कोर्ट के आदेश पर होल्ड हुए 1 करोड़ 28 लाख 18 हजार 125 रुपये वापिस पीड़ितों के खातो में ट्रांसफर कराए गए है। जिला पुलिस द्वारा माह मई 2025 के दौरान साइबर ठगी की कुल 396 शिकायत प्राप्त हुई। शिकाय़त पर कार्यवाही करते हुए धनराशि को वापिस पीड़ित के खाते में भिजवाने की प्रक्रिया पूरी करते हुए पीडितों को मई माह के दौरान 2487197 रुपये लौटाए है। जांच के बाद कोर्ट के आदेश पर पीड़ितों को रुपये वापिस किए गए है।

हेल्पलाइन नंबर पर करें शिकायत

इस तरह की ठगी से बचने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने पोर्टल तैयार किया है, जिसका एक हेल्पलाइन नंबर 1930 जारी किया गया है। जिस पर पीड़ति साइबर अपराध से संबंधित अपनी शिकायत दे सकते हैं। ऑनलाइन-साइबर ठगी का शिकार हुआ पीड़ति व्यक्ति तुरंत हैल्पलाइन नंबर-1930 पर शिकायत देता है तो फ्रॉड की जानकारी के आधार पर जिस अकाउंट में पैसा गया है साइबर अपराध डैस्क द्वारा उसी समय उस अकाऊंट को फ्रीज कर दिया जाएगा। जिस अकाउंट में पीड़ति का पैसा ट्रांसफर हुआ है। बैंक अकाउंट फ्रीज होने के बाद ठग-मालिक उससे पैसा निकाल नहीं पाएगा। साथ ही पीड़ति के अकाउंट से ट्रांसफर किए गए पूरे रुपये वापस पीड़ति के खाते में वापस ट्रांसफर कराए जाएंगे।

एएसपी वाईवीआर शशि शेखर

इन बातों से रहें सावधान

▶▶ शोल्डर सर्फिंगः- इसके जरिए जालसाज आपकों मद्द का झांसा देते और फिर कार्ड बदल लेते है।

▶▶ हिडेन कैमराः- जालसाज एटीएम में हिडेन कैमरे लगाते है जिसके जरिए लोगों के एटीएम कार्ड की जानकारी व पिन कोड चोरी कर लेते है।

साइबर ठगी के तरीके

▶▶ ऑनलाइन ऐप-एप्लिकेशन और बैंकिंग सिस्टम में सेंधमारी कर धोखाधड़ी कर रहे हैं।

▶▶ साइबर ठग हूबहू नकली संदेश तैयार करते है, जिसमें लिखा होता है कि आपके खाते में इतने प्राप्त हुए है।

▶▶ गलती से रुपये ज्यादा ट्रांसफर कर दिए। वापिस रुपये भेजने के नाम पर ठगी।

▶▶ शेयर मार्केट में इंवेस्ट करवाकर ज्यादा रुपये कमाने का लालच देकर ठगी

▶▶ फर्जी लोन के नाम पर

▶▶ घर बैठे रुपये कमाने का प्रलोभन देकर टेलीग्राम पर टास्क पूरा कराने के नाम पर ठगी

▶▶ विदेश से दोस्त बनकर वीजा या अस्पताल की एमरजैंसी दिखाकर धोखाधडी

▶▶ फर्जी पुलिस अधिकारी-सीबीआई अधिकारी बनकर फर्जी अरैस्ट वारंट जारी कर पीड़ित को डराते व धमकाते है।

▶▶ जालसाज अब प्रमुख कंपनियों के नाम से मिलती जुलती वेबसाइट बनाकर लोगों को गुमराह कर रहे है। क्यू आर कोड (क्विक रिस्पांस कोड) लिंक के जरिए बैंक खाते हैंक करने लगे है।

▶▶ स्कीमरः जालसाज स्कीमर का इस्तेमाल एटीएम के कार्ड रीडर स्लॉट में लगाकर डाटा चोरी करते है।

▶▶ फर्जी की-बोर्डः- एटीएम के की-बोर्ड पर साइबर अपराधी फर्जी की-बोर्ड चिपका देते है। जिसपर कार्ड की सारी जानकारी आ जाती है।

▶▶ मर्चंट/प्वाइंट ऑफ सेलः- इससे स्वैपिंग मशीन में एटीएम कार्ड डालने के दौरान ठग मैग्नेटिक स्ट्रिप/चिप का प्रयोग कर डाटा चोरी कर लेते है।

▶▶ फिशिंगः- फिशिंग की जरिए लोगों को स्पैम ई-मेल कर गोपनीय डाटा चोरी की जाती है।

रोहतक। धरना देते अनुबंधित कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

पीजीआई अनुबंधित कर्मचारियों का धरना 27वें दिन भी जारी

- बारिश में भी डटे रहे कर्मचारी, रवि आज़ाद ने दिया समर्थन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

पीजीआई के अनुबंधित कर्मचारियों का धरना शनिवार को 27वें दिन भी ताऊ देवी लाल पार्क में जारी रहा। मानसून की तेज़ बारिश के बावजूद सभी कच्चे कर्मचारी शांतिपूर्वक प्रदर्शन पर डटे रहे और प्रशासन व ठेकेदार के खिलाफ जोरदार नारेबाज़ी की। धरने को समर्थन देने पहुंचे भारतीय किसान यूनियन (यूथ) के नेता रवि आज़ाद ने कर्मचारियों की मांगों का खुलकर समर्थन किया।

उन्होंने पीजीआई प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि 30 जून तक कर्मचारियों की सभी मांगें नहीं मानी गईं, तो वे प्रदेशभर के किसानों और मज़दूरों के साथ धरने पर बैठेंगे। यदि इसके बाद संस्थान में कोई अव्यवस्था उत्पन्न होती है, तो इसकी पूरी ज़िम्मेदारी पीजीआई प्रशासन की होगी।धरने पर बैठे कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि उन्हें ठेकेदार द्वारा फोन कर धमकाया जा रहा है, लेकिन इसके बावजूद वे पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। कर्मचारियों की प्रमुख मांगों में एचकेआरएन के तहत नौकरी की सुरक्षा, भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई, और शोषण बंद करने जैसी मांगें शामिल हैं। कर्मचारियों का आरोप है कि अब तक पीजीआई प्रशासन की ओर से कोई भी अधिकारी उनसे संवाद करने नहीं आया है, जिससे उनकी नाराजगी और बढ़ गई है।

बाइक में पेट्रोल भरवाकर भागने की कोशिश, दो हथियारों सहित गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

शहर के बाईपास पर स्थित एक पेट्रोल पंप पर शुक्रवार रात उस समय अफरा-तफरी मच गई जब बाइक सवार दो युवकों ने पेट्रोल भरवाने के बाद पैसे दिए बिना सेल्समैन को धक्का देकर फरार होने की कोशिश की।

सेल्समैन की बहादुरीः लेकिन सेल्समैन और उसके सहयोगी की सतर्कता से दोनों युवक मौके पर ही पकड़ लिए गए। तलाशी में एक पिस्तौल और दो कारतूस बरामद होने पर पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। घटना रात करीब 10:20 बजे जियो पेट्रोल पंप पर हुई। यहां काम करने वाले सचिन निवासी सिकंदरपुर माजरा ने पुलिस को बताया कि दो युवक बाइक पर पेट्रोल भरवाने आए। उन्होंने बाइक की टंकी फुल करने को कहा। जब सचिन ने 800 रुपये मांगे, तो पीछे बैठे युवक ने उसे धक्का दे दिया और बाइक लेकर भागने लगे। सचिन ने तुरंत पीछे बैठे युवक को पकड़ लिया और उसका साथी सूरज भी दौड़कर दूसरे युवक को बाइक समेत पकड़ लाया। दोनों को काबू करने के बाद पुलिस को सूचना दी गई। कुछ ही देर में शहर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों युवकों की तलाशी ली। पूछताछ में आरोपियों की पहचान गांव कथूरा निवासी वीरेंद्र उर्फ मोनू पुत्र आजाद व वीरेंद्र उर्फ बिल्लू पुत्र धर्मबीर के रूप में हुई। तलाशी में वीरेंद्र पुत्र धर्मबीर के पास से एक पिस्तौल, जबकि दूसरे युवक से दो कारतूस बरामद हुए।

गोहाना। गिरफ्तार आरोपित के साथ पुलिस टीम।

राई स्पोर्ट्स स्कूल की प्रवेश परीक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

- बहलबा, बसाना और भराण गांव में मनाया जश्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महम

सोनीपत जिले के राई में स्थित मोती लाल नेहरू स्पोर्ट्स स्कूल की प्रवेश परीक्षा पास कर वहां दाखिल होने वाले विद्यार्थियों को बहलबा गांव में आयोजित एक समारोह में सम्मानित किया गया। राई खेल स्कूल में दाखिल होने वाले इन विद्यार्थियों का विजयी जुलूस निकाला गया। भराण, बसाना और बहलबा गांव में जश्न का माहौल है। भराण गांव की साक्षी पुत्री पिंकी और बसाना गांव निवासी समरजीत पुत्र कुलदीप बहलबा गांव स्थित आईसीएस कोचिंग सेंटर एवं खेल एकादमी में पढ़ते थे। यहीं पर इन्होंने खेल और पढाई में कड़ी मेहनत करके राई स्पोर्ट्स स्कूल में दाखिल होने का अवसर मिला है। आईसीएस अकादमी के संचालक आकाश राठी ने बताया की इन बच्चों ने सलेक्शन लेकर अपने प्रदेश, गांव, माता-पिता एवं शिक्षकों का नाम रोशन किया है।

आकाश ने बताया कि उनकी अकादमी में पढ़कर बच्चे लगातार सैनिक स्कूल, स्पोर्ट्स स्कूल, मिलिट्री स्कूल, नवोदय विद्यालय; आरआईएमसी देहरादून, आरोही मॉडल स्कूल, ओक ग्रेव स्कूल आदि बड़ी संस्थाओं में शारीरिक तथा लिखित परीक्षा पास करके वहां पर दाखिला ले रहे हैं। अकादमी द्वारा छात्रावास सुविधा प्रदान की जा रही है। एडवोकेट सुनील कुमार घोघलिया च निशा ने बताया कि इस अकादमी में गरीब परिवारों के बच्चे भी मेहनत करके अपने माता पिता का नाम रोशन कर रहे हैं। गुरुजनों के उचित मार्गदर्शन व खेल ग्राउंड पर करवाई जा रही कड़ी मेहनत अब रंग लाने लगी है। अन्य विद्यार्थियों को साक्षी और समरजीत से प्ररेणा लेनी चाहिए। साक्षी को 7वीं कक्षा में और समरजीत को 8वीं कक्षा में प्रवेश मिला है।

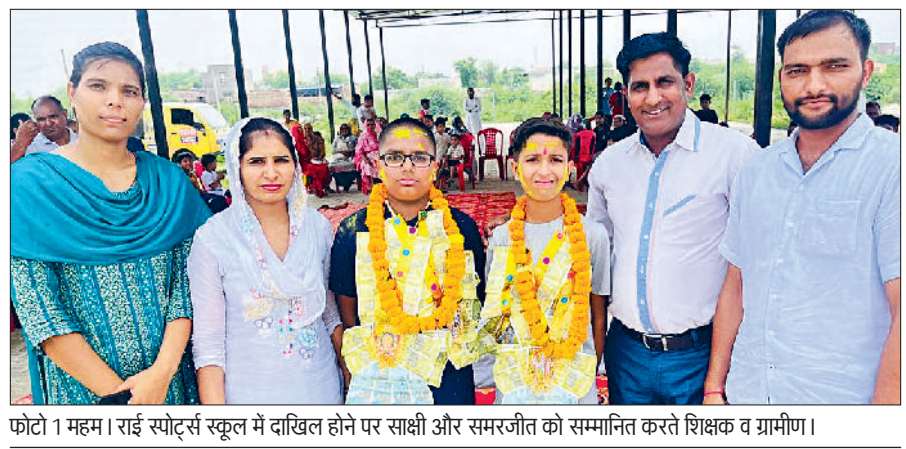

फोटो 1 महम। राई स्पोर्ट्स स्कूल में दाखिल होने पर साक्षी और समरजीत को सम्मानित करते शिक्षक व ग्रामीण।

झज्जर। राजकीय नेहरू कॉलेज परिसर में सीएम का पुतला फूंकते हुएए एनएसयूआई संगठन के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

एनएसयूआई ने सीएम का पुतला फूंका

झज्जर। शनिवार को हिसार कृषि विश्वविद्यालय में आंदोलनरत छात्रों के समर्थन में एनएसयूआई संगठन ने राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में सीएम नायब सिंह सैनी का पुतला फूंका और सरकार विरोधी जमकर नारेबाजी की। उन्होंने कृषि विश्व विद्यालय हिसार के वीसी को हटाने की मांग की। एनएसयूआई के अध्यक्ष अविनाश यादव ने इस मामले में सरकार की कार्रवाई को गलत बताया और कहा कि सरकार जानबूझ कर आंदोलनरत छात्रों के साथ अत्याचार कर रही है। उन्होंने कहा कि हिसार कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों की ओर से स्कॉलरशिप की मांग को लेकर धरना दिया गया था। उस दौरान रजिस्ट्रार की मौजूदगी में प्रोफेसर और सिक्योरिटी गार्ड द्वारा छात्रों पर बुरी तरह से पीटा गया था।

वर्ल्ड मिलिट्री चैंपियनशिप में सुमित दलाल ने जीता गोल्ड मेडल

बहादुरगढ़। मांडोठी का पहलवान सुमित दलाल विश्व स्तर पर लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। अब उसने जर्मनी में आयोजित वर्ल्ड मिलिट्री रेसलिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीत लिया है। बीते आठ दिन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुमित का यह दूसरा गोल्ड मेडल है। उसकी जीत पर परिजन व कुश्ती प्रेमी गदगद हैं। स्वदेश लौटने पर अखाड़े में साथी पहलवानों द्वारा उसका जोरदार अभिनंदन किया जाएगा।

दरअसल, इंटरनेशनल मिलिट्री स्पोर्ट्स काउंसिल की ओर से 22 से 29 जून तक जर्मनी में वर्ल्ड मिलिट्री कुश्ती चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। दुनियाभर की सेनाओं के पहलवान इसमें भाग ले रहे हैं। भारतीय सेना की ओर से हिंद केसरी सोनू अखाड़े के पहलवान सुमित दलाल ने जोर आजमाइश की। सुमित ने 60 केजी ग्रीको रोमन में दमदार खेल दिखाते हुए गोल्ड पर कब्जा जमाया। कोच धर्मेंद्र दलाल ने कहा कि सुमित बेहद होनहार पहलवान है। मिलिट्री वर्ल्ड चैंपियनशिप में ग्रीको वर्ग में गोल्ड मेडल जीतने वाला वह पहला पहलवान है। पिछले सप्ताह वियतनाम में हुई एशियन चैंपियनशिप में भी सुमित ने गोल्ड मेडल जीता था।

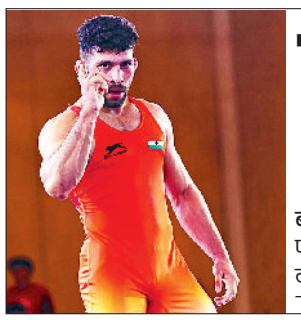

- सुमित ने आठ दिन के अंदर विश्व स्तर पर दो मेडल जीते

बहादुरगढ़। पहलवान सुमित दलाल।

कॉलेजों में रविवार को भी होंगे दाखिले

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

कॉलेजों में दाखिला प्रक्रिया जारी है। स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने गुरुवार दोपहर पहली सूची जारी कर दी थी। वैश्य कन्या महाविद्यालय दाखिले के लिए रविवार को भी खुला रहेगा।

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि प्रथम मेरिट सूची में जिन छात्राओं के नाम आए हैं, वे महाविद्यालय में आकर अपने दस्तावेज वेरिफाई कर फीस ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन तरीके से भरकर अपनी सीट सुनिश्चित कर रही हैं। यदि छात्राएं निर्धारित समय में फीस नहीं भरती हैं तो उनकी सीट रद्द मानी जाएगी। दस्तावेजों का सत्यापन महाविद्यालय में ऑफलाइन चल रहा है।

एडमिशन नोडल ऑफिसर डॉ. नेहा नैन ने बताया कि दूसरी प्रोविजनल मेरिट लिस्ट दो जुलाई व फाइनल मेरिट लिस्ट तीन जुलाई को उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा जारी कर दी जाएगी।

राष्ट्रव्यापी हड़ताल में शामिल होगी पटवार एवं कानूनगो एसोसिएशन

रोहतक। दी रेवेन्यू पटवार एवं कानूनगो एसोसिएशन हरियाणा के प्रधान जयबीर चहल ने बताया कि उनकी एसोसिएशन 9 जुलाई की राष्ट्रव्यापी हड़ताल में शामिल होगी। चहल ने कहा कि इस बारे में विचार विमर्श करने के लिए शुक्रवार को संगठन की मीटिंग हुई। इसमें हड़ताल में शामिल होने का निर्णय लिया गया। हड़ताल के अलावा पटवारियों और कानूनगो की मांगों और समस्याओं के बारे में बैठक में विचार विमर्श हुआ। पूर्व प्रधान सूरजभान खोखर, पिरथी सिंह काकड़, महा सचिव सन्नी दहिया, वरिष्ठ सलाहकार सोनू दहिया, राज्य सचिव अशोक शर्मा, उप प्रधान विकास राठी, कोषाध्यक्ष सन्नी डागर, सलाहकार दिलावर सिंह, कार्यकारिणी सदस्य बलबीर सिंह आदि मौजूद रहे।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा आज शहर में

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

लोक निर्माण (भवन एवं सड़क) तथा जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को झज्जर दौरे पर रहेंगे। इस संबंध में जानकारी देते हुए उनके निजी सचिव अरुण कुमार ने बताया कि कैबिनेट मंत्री सांय चार बजे शहर के पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह पहुंचेंगे, जहां वह गुरु दक्ष प्रजापति समाज की सार्वजनिक बैठक को संबोधित करेंगे। इसके उपरांत विश्राम गृह में ही सांय साढ़े चार बजे कैबिनेट मंत्री प्रेस कॉन्फ्रेंस को भी संबोधित करेंगे।

जिले के प्रबुद्ध समाज के लोगों ने एलपीएस बोसार्ड के एमडी को दीं शुभकामनाएं

राजेश जैन जन्मदिन का बड़ी धूमधाम के साथ मनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

जिले के प्रबुद्ध समाज के लोगों द्वारा एलपीएस बोसार्ड के एमडी एवं सेवाभी राजेश जैन का 67वां जन्मदिवस बड़े धूमधाम व हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। शहर में शैक्षणिक, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं द्वारा अलग अलग स्थानों पर हवन यज्ञ, रक्तदान, स्वास्थ्य जांच शिविर, पौधारोपण व भंडारों का आयोजन किया गया। साथ ही इस अवसर पर राजेश जैन ने सामाजिक संस्थाओं को दो आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं से सुसृजित एंबुलेस भी भेंट की, ताकि आपतकालीन स्थिति में इनका निशुल्क उपयोग किया जा सके। वहीं गरीब व अहसाय बच्चों को शिक्षित करते के लिए कम्यूटर लैब का भी उदघाटन किया।एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन हर समय लोगों की मदद के लिए तत्पर पर रहते है और इसी के चलते आज वह सेवाभी के रूप में अपनी अलग पहचान भी बना चुके है। सतीभाई सेवा दल द्वारा सेवाभी राजेश जैन के जन्मदिवस के अवसर पर महावीर लाइब्रेरी में लगाए गए रक्तदान शिविर में 125 युवाओं ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। हरिओम सेवा दल द्वारा स्वास्थ्य जांच शिविर में वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम ने दो सौ से अधिक लोगों की जांच कर उन्हें उचित परामर्श दिया। साथ ही दिव्यांग व जरूरतमंदों को निशुल्क उपकरण भी वितरित किए गए। रक्तदाताओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। रोटरी क्लब, माता धनपति देवी, महाराजा अग्रसेन ट्रस्ट, जन सेवा संस्थान द्वारा भी राजेश जैन के जन्मदिवस पर धार्मिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर महामण्डलेश्वर बाबा कपिल ने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है और सेवाभी राजेश जैन जिस प्रकार से निस्वार्थ भाव से लोगों की मदद करते है, वह अपने आप में एक मिशाल है।

रोहतक। शिविर में रक्तदाता को बैज लगाते संत समाज व एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन। फोटो : हरिभूमि

रोहतक। दो एंबुलेस भेंट करते एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन ।

राजेश जैन प्रेरणा के स्रोत

पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर ने कहा कि जिस प्रकार से सेवाभी राजेश जैन लोगों की मद्दद के लिए हमेशा आगे रहते है, दूसरे लोगों को भी उनसे प्ररेणा लेनी चाहिए और हमेशा अपनी नेक कमाई से जरूरतमंद लोगों की मद्दद जरूर करनी चाहिए। इस अवसर पर एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन ने कहा कि जीवन में सबसे ज्यादा खुशी उस वक्त मिलती है, जब वह अपनी खुशी को दूसरों के साथ मिलकर मनाता है। उन्होंने कहा कि आज जिस प्रकार से समाज के प्रबुद्ध लोगों ने उनका जन्मदिवस मनाया है, वह उनका सदैव ऋणी रहेगे, क्योकि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में यही चाहता है कि वह कोई ऐसा उदाहरण पेश करे जो युगो युग तक मिशाल बन जाए।

सूचना

मैं, अत्तर सिंह पुत्र श्री दरियाव सिंह निवासी गांव नुनोंद (43) नोनन्द, जिला रोहतक - 124501 हरियाणा घोषणा करता हूं कि मेरा पुत्र कुलदीप व उसकी पत्नी अंजू मेरे व मेरे परिवार के कहने सुनने से बाहर हैं, इसलिए मैं इनको अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। मेरा व मेरे परिवार का इनसे कोई वास्ता नहीं है। भविष्य में ये दोनों अपने लेन देन व अन्य किसी भी कानूनी व गैर कानूनी कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगे। मेरी व मेरे बाकी परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

महम खंड के गांव सीसर खास में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन

स्कूल में पौधरोपण कर ग्रामीणों को दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

ग्राम पंचायत की सभी जायज मांगों को जल्द पूरा करवाया जाएगा : उपायुक्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने जिला के महम खंड के गांव सीसर खास में आयोजित रात्रि ठहराव कार्यक्रम में ग्राम पंचायत, शिक्षा विभाग व स्कूल प्रबंधन को जिला का सबसे सुंदर विद्यालय बनाए रखने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा ग्राम पंचायत की सभी जायज मांगों को पूरा करवाया जाएगा। कार्यक्रम में अनुपस्थित रहने वाले अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया जाएगा।

धर्मेंद्र सिंह शुक्रवार को रात सीसर खास गांव स्थित शहीद जसबीर सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में जिला प्रशासन द्वारा हरियाणा उदय कार्यक्रम के तहत आयोजित रात्रि ठहराव कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि ग्रामीणों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार गांव स्तर पर लोगों की शिकायतों को निपटाने के उद्देश्य से हरियाणा उदय कार्यक्रम के तहत प्रत्येक माह जिला के एक गांव में जिला प्रशासन द्वारा रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

ग्रामीणों की शिकायतों के समाधान के निर्देश

उपायुक्त ने कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से किया तथा इसके उपरांत विद्यालय प्रांगण में पौधरोपण कर ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने ग्राम वासियों की शिकायतों की सुनवाई करते हुए मौके पर उपस्थित संबंधित विभागों के अधिकारियों को इन शिकायतों के निपटारे के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी प्राथमिकता के आधार ग्रामीणों की समस्याओं व शिकायतों का समाधान करें। उन्होंने ग्राम पंचायत की सराहना करते हुए कहा कि पंचायत विभाग के साथ-साथ ग्राम पंचायत द्वारा रात्रि ठहराव कार्यक्रम के अच्छे प्रबंध किए गए है। उन्होंने कहा कि गांव में बच्चों के लिए शिक्षा की बेहतर व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि गांव वासियों से प्राप्त शिकायतों को संबंधित विभागों के अधिकारियों को सौंप दिया गया है तथा उन्हें यथाशीघ्र शिकायतों के निपटारे के निर्देश भी दिए गए है। इससे पूर्व उन्होंने विद्यालय प्रांगण में विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का निरीक्षण किया तथा विभागों के प्रयासों की सराहना की।

पगड़ी पहनाकर किया अभिनंदन

ग्राम पंचायत व गांव के मौजिज व्यक्तियों ने उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह, अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रदीप कौशिक, महम के पुलिस उपाधीक्षक संदीप कुमार, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल का मान-सम्मान का प्रतीक पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया। जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल ने विभाग व ग्राम पंचायत की ओर से उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह, अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

उपायुक्त ने बुजुर्गों को वितरित किए चश्मे

रात्रि ठहराव कार्यक्रम में जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा नेत्र जांच शिविर लगाया गया। नेत्र जांच शिविर में मोबाइल बस के माध्यम से ग्रामीणों की आंखों की जांच की गई तथा जरूरतमंद व्यक्तियों को जिला प्रशासन की ओर से उपायुक्त ने मुफ्त चश्मे वितरित किए। इस अवसर पर सहायक उपकरणों के लिए भी दिव्यांगजनों व वरिष्ठजनों का पंजीकरण किया गया। रात्रि ठहराव कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग, आयुष विभाग, समाज कल्याण, उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम त्यादि विभागों द्वारा स्टॉल लगाकर ग्रामीणों को कल्याणकारी योजनाओं व सुविधाओं का लाभ दिया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रदीप कौशिक, महम के पुलिस उपाधीक्षक संदीप कुमार, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल, सिविल सर्जन डॉ. रमेश चंद्र, महम पंचायत समिति के चेयरमैन नवनीत राठी, गांव की सरपंच अनुराधा, जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दिलजीत सिंह, उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम की कार्यकारी अभियंता सीमा नारा, लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता अरूण कुमार, पंचायती राज विभाग के कार्यकारी अभियंता गजेंद्र सिंह, जिला खेल अधिकारी मनोज कुमार, एलडीएम महाबीर प्रसाद, विद्यालय की प्राचार्या प्रभा सिवाच, सामाजिक शिक्षा व पंचायत अधिकारी सुधीर, दलशेर सिहमार उर्फ पोपन, सरपंच प्रतिनिधि धर्मेंद्र सिहमार सहित विभिन्न विभागों उच्चाधिकारी व गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

सीसर खास के पूर्व सरपंच के खिलाफ डीसी को दी शिकायत

नाले के निर्माण में लाखों रुपये के गबन का आरोप

- नहर से गांव के थाना तालाब तक कागजों में ही बन गया नाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम होने से सीसर खास गांव के लोगों को अपने गांव में विकास कार्यों में तेजी आने की उम्मीद बंधी है। वहीं रात्रि ठहराव कार्यक्रम में एक ऐसा भी मामला आया है, जिसमें एक ग्रामीण ने पूर्व सरपंच के खिलाफ नाला निर्माण कार्य में गबन किए जाने की शिकायत दी है। डीसी धर्मेंद्र सिंह को दी शिकायत मे सुनील पुत्र रणधीर सिंह ने बताया कि उनके गांव में पूर्व सरपंच द्वारा लाखों रुपए का गबन किया गया है।

निष्पक्ष जांच की मांग

सय रोड पर स्थित भिवानी डिस्ट्रीब्यूटरी से लेकर गांव के थाना तालाब तक जोहड़ में नहरी पानी डालने के लिए एक पक्का नाला बनाया जाना था। इस नाले का निर्माण केवल कागजों में ही कर दिया गया। धरातल पर कुछ नहीं किया गया। जिस वजह से सरपंच ने सरकारी धन का गबन कर लिया। इस बारे में वह बार बार आरटीआई के तहत सूचनाएं मांग रहा है। लेकिन पंचायत विभाग के अधिकारी उसे अधूरी सूचनाएं दे रहे हैं। वर्ष 2020 से आरटीआई लगाई जा रही हैं। इस मामले की जांच की जानी चाहिए, ताकि गांव के सामने पूर्व सरपंच की सच्चाई सामने आ सके। जो नाला बनाया जाना था, उस जगह की लंबाई करीब 3-4 किलोमीटर है। सुनील ने जिला उपायुक्त से मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

भाजपा नेता ने उठाई महम के लोगों की समस्याएं

महम। जिला प्रशासन द्वारा सीसर खास गांव में आयोजित किए गए रात्रि ठहराव कार्यक्रम में भाजपा नेता अजीत अहलावत ने महम के लोगों की समस्याएं उठाई। इस दौरान उन्होंने जिला उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह के सामने पेयजल समस्या का समाधान करने और रास्ते पक्के किए जाने की मांग की। कहा कि महम शहर के जलघर की सफाई की जानी चाहिए और रजवाहे व नाले को पक्का किया जाए। अहलावत ने बताया कि सीसर खास गांव में जिला प्रशासन के सामने गांव की फिरनी, नाली और गलियां पक्की करने की मांग अधिक आई। आस पास के गांवों के भी काफी संख्या में लोग जिला उपायुक्त से मिलने पहुंचे।

राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि शिक्षा विभाग हरियाणा की ओर से राज्य शिक्षक पुरस्कार-2025 के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। योग्य और पात्र अध्यापक आगामी 11 जुलाई तक विभागीय पोर्टल के माध्यम से अपना आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि केवल पोर्टल के माध्यम से प्राप्त होने वाले ऑनलाइन आवेदन ही स्वीकार किए जाएंगे। किसी भी परिस्थिति में ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। यदि आवेदक शिक्षक को पोर्टल या लिंक पर अपना आवेदन करते समय किसी प्रकार की कोई तकनीकी समस्या आती है तो वह विभाग की ईमेल आईडी स्टेटटीचरअवार्ड2021 @ जीमेल.कॉम या हेल्पलाइन नंबर 0172-5049801 पर संपर्क कर सकता है।

ओमेक्स सिटी में जलभराव का खतरा

- परशुराम जयंती के बाद ड्रेन की अनदेखी पर उठ रहे सवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक में आयोजित राज्य स्तरीय परशुराम जयंती कार्यक्रम के बाद छोड़ी गई अव्यवस्थाएं अब स्थानीय निवासियों के लिए मुसीबत बनती नजर आ रही हैं। कार्यक्रम के दौरान पार्किंग सुविधा के लिए बनाई गई अस्थायी ड्रेनेज व्यवस्था में मिट्टी के बांध बनाकर रास्ता तैयार किया गया था, जिसे कार्यक्रम समाप्ति के बाद भी हटाया नहीं गया।

अब जब मानसून की दस्तक करीब है, ओमेक्स सिटी के निवासी गंभीर चिंता में हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि ड्रेन के रास्ते में बने मिट्टी के अवरोध बारिश के पानी की निकासी में बाधा बन सकते हैं। यदि भारी बारिश होती है, तो पानी ड्रेन से निकलने के बजाय ओमेक्स सिटी में घुस सकता है, जिससे बस्तियों में जलभराव और घरों में नुकसान की आशंका है। निवासियों ने प्रशासन से मांग की है कि तत्काल प्रभाव से इन अस्थायी मिट्टी के बांधों को हटाया जाए और ड्रेनेज को पूरी तरह से सुचारु किया जाए। लोगों ने चेतावनी भी दी है कि यदि समय रहते कोई कदम नहीं उठाया गया, तो प्रशासन को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

स्थानीय प्रशासन की निष्क्रियता पर सवाल उठाते हुए लोगों ने कहा कि आयोजनों के बाद बचे ढांचे और व्यवधानों को हटाने की जिम्मेदारी भी प्रशासन की ही होती है। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस चेतावनी को कितनी गंभीरता से लेता है और समय रहते समाधान करता है या नहीं।

कक्षा प्रबंधन की प्रभावी तकनीकों से कराया अवगत

- एचडी स्कूल में कक्षा प्रबंधन विषय पर कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

बहुअकबरपुर स्थित एचडी पब्लिक स्कूल में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास के उद्देश्य से 'कक्षा प्रबंधन' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य संसाधन व्यक्ति के रूप में डॉ. ऋतु कौड़ा ने सहभागिता की। उन्होंने अपने समृद्ध अनुभवों और शोध आधारित दृष्टिकोण से शिक्षकों को कक्षा प्रबंधन की आधुनिक एवं प्रभावी तकनीकों से अवगत कराया। डॉ. कौड़ा ने प्रतिभागी शिक्षकों के साथ संवादात्मक शैली में कार्यशाला को अत्यंत रोचक और प्रेरणादायक बनाया। इस कार्यशाला का आयोजन वीवा एजुकेशन के सहयोग से किया गया, जिसमें वीवा एजुकेशन के धर्मेंद्र ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यशाला की गुणवत्ता को और सशक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के निदेशक सुरेन्द्र फौगाट, शैक्षणिक निदेशक कृष्णा बल्हारा फौगाट तथा प्रधानाचार्य दुलाल देब ने की। उन्होंने शिक्षकों को नवाचारपूर्ण एवं छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कृष्णा बल्हारा फौगाट ने अपने संबोधन में कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका केवल विषय पढ़ाने तक सीमित नहीं रह गई है, वह अब एक मार्गदर्शक, प्रेरक और नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभा रहे हैं। ऐसी कार्यशालाएं उन्हें उस दिशा में सशक्त बनाती हैं।

कार्यशाला के अंत में शिक्षकों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। सभी शिक्षकों ने इस सत्र को अत्यंत उपयोगी, व्यवहारिक एवं ज्ञानवर्धक बताते हुए आयोजकों का धन्यवाद किया।

निःशुल्क शिविर में जांचा लोगों का स्वास्थ्य

रोहतक। महाराजा अग्रसेन सेवा सदन ट्रस्ट व फॉर्टिस अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। इस मौके पर फॉर्टिस हॉस्पिटल डॉक्टर्स की टीम उपस्थित रही। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में एलपीएस बोसार्ड एमडी राजेश जैन उपस्थित रहे।

उन्होंने कहा कि आज सभी बीमारियों का केंद्र शुगर है अगर शुगर नियंत्रित है तो बहुत ही बीमारियों से बचा जा सकता है। इस मौके पर भाजपा के कोषाध्यक्ष अजय बंसल, ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेश गोयल, सुशील गुप्ता, सतीश गोयल, मुकेश गुप्ता, मदन गुप्ता मौजूद रहे। सलारा मोहल्ला स्थित श्री रामाकृष्णा मंदिर में महाराज अग्रसेन ट्रस्ट द्वारा वाटर कूलर का उद्घाटन किया गया।

200 से अधिक मरीजों ने स्वास्थ्य जांच का उठाया लाभ

- संतोष कैंसर फाउंडेशन, हिसार और वी केयर मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल ने लगाया नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सामाजिक सरोकार एवं जनकल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए संतोष कैंसर फाउंडेशन, हिसार के सहयोग से और वी केयर मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के तत्वावधान में एक नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह शिविर विश्वकर्मा मंदिर, रामनगर, रोहतक में आयोजित हुआ, जिसका नेतृत्व डॉ. भूषण कथूरिया (ईएनटी एवं हेड एंड नेक ऑन्कोलॉजी विशेषज्ञ) ने किया। शिविर में ईएनटी, ऑर्थोपेडिक्स, मेडिसिन, बाल रोग, डेंटल और पैन मैनेजमेंट जैसी विशिष्टताओं के अनुभवी डॉक्टरों की टीम ने मरीजों की जांच की और परामर्श दिया। इस स्वास्थ्य शिविर में 200 से अधिक मरीजों ने

निःशुल्क चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठाया, जो कि जनसेवा की दिशा में एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही। शिविर में डॉ. विकस कक्कड़, डॉ. विकास कक्कड़, डॉ. भूषण कथूरिया, डॉ. हिमानी ढींगरा, डॉ. रोहित अरोड़ा, डॉ. हर्षदीप, डॉ. रिदम अरोड़ा, डॉ. शैलेन्द्र बामल, डॉ. धीरज यादव, सहित अन्य विशेषज्ञ डॉक्टरों ने भाग लिया। इस शिविर का उद्देश्य समाज के जरूरतमंद वर्गों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना और लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना रहा। आयोजन में संत बाबा सूखा शाह महाराज का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। वी केयर हॉस्पिटल के प्रबंधन से पंकज आहूजा ने बताया कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर पहले भी आयोजित किए जा चुके हैं और भविष्य में भी इन्हें नियमित रूप से आयोजित किया जाता रहेगा, ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति तक निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जा सकें।

प्रशिक्षण शिविर में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

रोहतक। हरियाणा कन्या वाहिनी द्वारा आरएसएस स्कूल में आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिविर के तीसरे दिन पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों से आए कैडेटों में से प्रत्येक संस्थान से 2 प्रतिभागी इस प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए। ऑपरेशन सिंदूर, पुनीत सागर अभियान, वर्षा जल संग्रहण और नशा मुक्ति जैसे संवेदनशील विषयों में कैडेट को अपनी कला का प्रदर्शन करने का अवसर मिला। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य उपरोक्त विषय पर सामाजिक जागरूकता फैलाना भी था। पोस्टर के माध्यम से कैडेटों को अपने विचार रंगचित्र में प्रकट करने का मौका मिला। लेफ्टिनेंट रेणु और सेकंड ऑफिसर स्वाति के नेतृत्व में इस प्रतियोगिता का आयोजन पूर्णत निष्पक्ष रूप से किया गया। वहीं खेल क्षेत्र में वरिष्ठ वर्गीय कैडेटों के लिए वॉली बॉल प्रतियोगिता का आयोजन फर्स्ट ऑफिसर ज्योति के नेतृत्व में किया गया। कमान अधिकारी कर्नल अमित मैथ्यू ने प्रतियोगिता पूर्व सभी प्रतियोगियों का मनोबल बढ़ाया और उन्हें उम्दा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 92536810 19-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

कार्यक्रम बीके रक्षा दीदी (सेंटर इंचार्ज) ने सभी ट्रेनी सिपाहियों को तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई

इस मौके पर करीब 1500 सिपाहियों ने उपस्थिति दर्ज करवाई

पुलिस प्रशिक्षण केंद्र में हुआ ट्रेनी कांस्टेबल के लिए आर्ट ऑफ हैप्पी लाइफ का प्रोग्राम

हरिभूमि न्यूज. रोहतक

पुलिस प्रशिक्षण केंद्र में ब्रह्माकुमारी संस्था से ट्रेनी कांस्टेबल के लिए आर्ट ऑफ़ हैप्पी लाइफ का प्रोग्राम रखा गया। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र से शिवचरण अत्री, आशा अत्री, ध्यान सिंह, पृथ्वी सिंह एवं पीटीसी स्टाफ सहित लगभग 1500 सिपाही उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारी संस्था की तरफ से बीके रक्षा दीदी, बीके सीमा, रिटायर्ड आईजी कुलदीप सिंह श्योराण और रिटायर ब्रिगेडियर हरबीर सिंह कुंडू उपस्थित रहे। आईजी कुलदीप सिंह श्योराण ने ब्रह्माकुमारी संस्था का परिचय दिया कि ब्रह्माकुमारी संस्था कैसे विश्व कल्याण के कार्य में लगी हुई है। इस

संस्था में 19 विंग्स है जिसमें से एक सिक्योरिटी विंग है। इस विंग के अंतर्गत थल सेना, जल सेवा और वायु सेवा के सभी सिपाहियों को तनाव मुक्त जीवन, हैप्पी लाइफ जीने की कला सिखाई जाती हैं। ब्रिगेडियर हरदीप सिंह कुंडू ने अपना अनुभव सांझा किया। बताया कि मेडिटेशन

सीखने के बाद मेरे अंदर एक सकारात्मक परिवर्तन आया। निर्णय करने की शक्ति बढ़ी। कारगिल युद्ध में सही समय पर सही निर्णय लेने पर सैनिकों की रक्षा की। बीके रक्षा दीदी (सेंटर इंचार्ज) ने सभी ट्रेनी सिपाहियों को हैप्पी लाइफ और तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई।

मेडीटेशन के बारे में दी जानकारी

जीवन में आने वाले चैलेंज का सामना करने के लिए मन को सशक्त बनाना है जो कि राजयोग मेडिटेशन के द्वारा संभव है। बीके सीमा ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया। मेडिटेशन अर्थात अपने आप से जुड़ना और सुप्रीम अथॉरिटी परमात्मा से जुड़ना है। मेडिटेशन से हमारा मन शांत और स्थिर होता है जिससे हम अपने जीवन में आने वाली हर परिस्थिति को आसानी से पार कर सकते हैं एवं हर समस्या का समाधान हमारे पास होगा। आत्मा को सशक्त करने से ही जीवन रूपी यात्रा सरल होगी। अंत में मेडिटेशन द्वारा सभी ट्रेनी सिपाहियों ने एवं पुलिस स्टाफ ने शांति की अनुभूति की।

हरिभूमि रविवार भारती

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्पेशल: वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

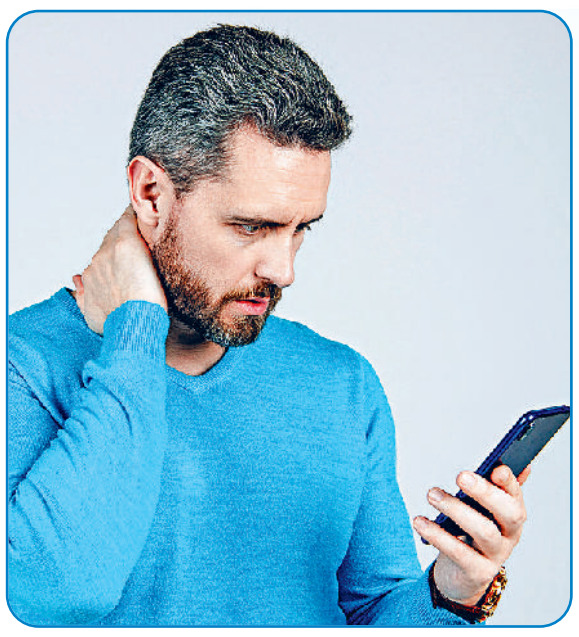

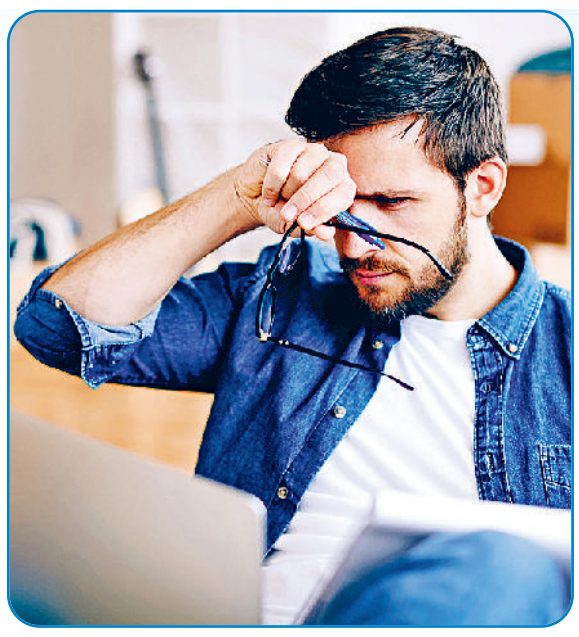

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूज: कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्स: सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

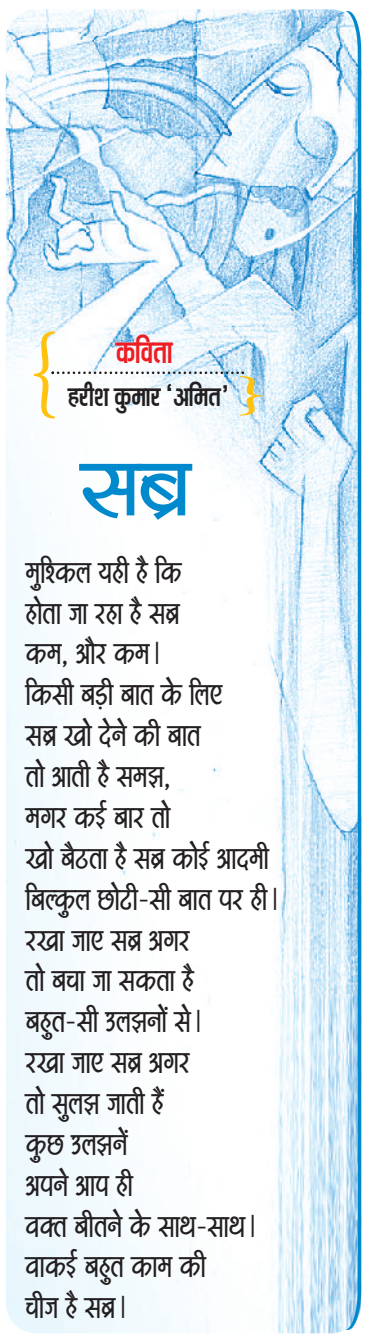

सब्र

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

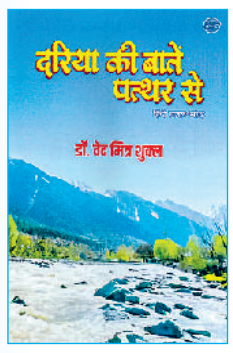

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तक: दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखक: डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्य:** 290 रुपए,
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

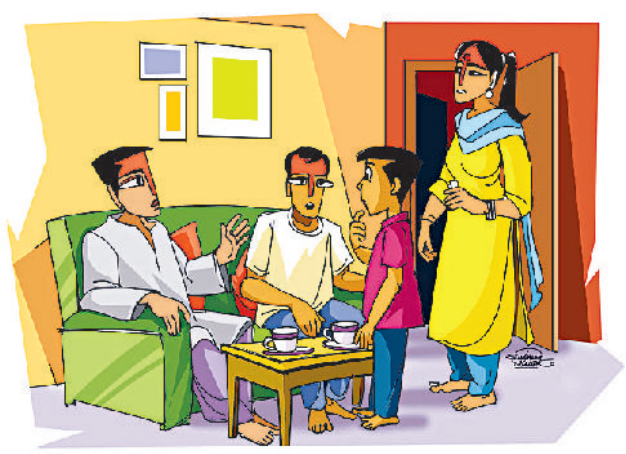

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

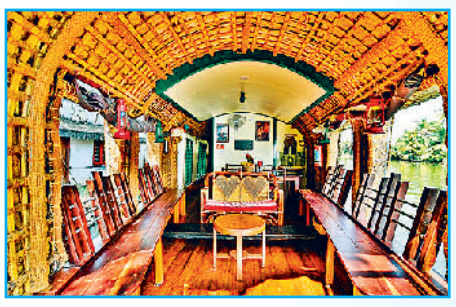

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *